ग्लोबल वार्मिंग और रोकथाम के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास

(कोपेन हेगेन के विशेष संदर्भ में)

वेदवती मंडावी

राजनीति शास्त्र विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या संपूर्ण विश्व के लिये चिंतनीय है। इसका सूत्रपात औद्योगिक क्रांति के साथ हुआ है। औद्योगिक क्रांति से विकास की गति में तेजी आयी तब दूसरी ओर ग्लोबल वार्मिंग एवं उससे उत्पन्न समस्या मुंह बांये करके खड़ी है। फलस्वरूप दुनियाँ को चिंतित होना स्वाभाविक है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान में वृद्धि हो रही है, जलवायु परिवर्तन होने से कई रोगों का जन्म हो रहा है। महासागरों में जल स्तर बढ़ रहा है, जो मानव जीवन के लिये खतरा है। इसकी रोकथाम हेतु विश्व स्तरीय प्रयास जारी हैं।

इस कड़ी में 2009 में स्वीडन की राजधानी कोपेन हेगेन में दस दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में 193 देशों के राष्ट्राध्यक्ष, प्रतिनिधि, विदेश मंत्री एवं पत्रकार सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन की खास विशेषता यह थी कि सम्मेलन में पर्यावरण हितैषियों द्वारा रैली निकाली गई थी, जिसने हिंसक रूप धारण कर लिया। जिससे 1000 लोग गिरफ्तार एवं रिहा हुए। इसी प्रकार सं. रा. संघ द्वारा 2050 तक 50 प्रतिशत कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा कम करने की बात कही गई। पूर्व सम्मेलनों की भाँति इस सम्मेलन में भी गरीब एवं अमीर देशों में अंतर्विरोध दिखाई दिया। विकासशील देशों की ओर से ब्राजील, चीन एवं भारत की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस सम्मेलन में दीर्घकालीन लक्ष्य, बाध्यकारी समझौता, उत्सर्जन में कटौती, गरीब देशों को वित्तीय सहायता, वन संरक्षण, कार्बन बाजार का जिक्र किया गया।

बीज शब्दः ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस, हरितकोष, वैश्विक क्रांति

उद्देश्य–इस शोधलेख का प्रमुख उद्देश्य ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से विश्व के सभी नागरिकों को अवगत कराना है। सभी चिंतित देशों द्वारा किये गये उपायों के संबंध में की गई चर्चा को सामने लाना है।

ग्लोबल वार्मिंग का सूत्रपात 18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के साथ हुआ। सर्वप्रथम इंग्लैण्ड से प्रारंभ होकर 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोपीय देशों के साथ–साथ अमेरिका तक तेजी से फैल गया। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में जीवाश्म ईंधन के लगातार उपयोग से वातावरण में कार्बन डॉइआक्साइड की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान भी बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार पिछली शताब्दी की तुलना में इस शताब्दी में 15 डिग्री सेल्सियस

Corresponding Author: Email: vvmandavi13@gmail.com
Mobile No. 9993565900

तक वृद्धि हुई है। जिसके कारण ध्रुवीय प्रदेशों से ग्लेशियर पिघलकर महासागरों के जलस्तर में बढ़ोतरी देखी जा रही है।

अतः ग्लोबल वार्मिंग पर विश्व के सभी देशों का चिंतित होना स्वाभाविक है। एक ओर, सभी देशों का प्रमुख मुद्दा राष्ट्रहित एवं विकास है, तो दूसरी ओर विकास बनाम पर्यावरण प्रदूषण एवं ग्लोबल वार्मिंग की समस्या मुंह बाये करके खड़ी है, जो विश्व के सभी देशों को चिंतित होने पर मजबूर कर रही है। आज विश्व के समक्ष मानव जीवन के अस्तित्व के लिये सबसे बड़ी चुनौती है। यही कारण है कि विश्व के सभी छोटे–बड़े एवं जागरूक राष्ट्र इस चुनौती का सामना करने के लिये निरंतर प्रयासरत है। जिसमें इस सदी का महत्वपूर्ण सम्मेलन 2009 में स्वीडन की राजधानी कोपेने हेगेन में दस दिन का निरंतर चिंतन–मनन किया।

ग्लोबल वार्मिंग तापमान में निरंतर वृद्धि होना ही ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है। वायुमंडल में मिथेन, कार्बन डाई ऑक्साइड, सल्फर डाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड आदि गैसों के कारण सूर्य से आने वाली ऊष्मा को अवशोषित तो कर लेता है, किन्तु उसका उत्सर्जन नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप पृथ्वी पर तापमान औसत से अधिक बढ़ता जा रहा है। जिससे जलवायु में विभिन्नता बढ़ रही है। ग्लेशियर पिघलने के अलावा सूखा, बाढ़, असमय वर्षा एवं तापमान में वृद्धि हो रही है, इसे ही ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। वैश्विक ताप वृद्धि पर भारत ही नहीं पूरी दुनियाँ चिंतित है। इसकी रोकथाम हेतु समय–समय पर दुनियाँ भर के नेता एकत्रित होकर अपने–अपने सुझाव एवं समस्याओं से अंतर्राष्ट्रीय जगत को अवगत कराने का प्रयास किया। सर्वप्रथम 1949 में लेक सेक्स सम्मेलन, 1972 स्कार होम, 1977 अर्जेंटाइना, 1982 नैरोबी और 1992 रिओ घोषणा पत्र महत्वपूर्ण प्रयास हैं। ग्लोबल वार्मिंग पर क्योटो संधि 1997 में एकरूपता बनाने की कोशिश की गई। इसके बाद 2002 एवं 2005 में क्योटो ताप संधि पर सहमति व्यक्ति की गई। इस सहमति को बरकरार रखने हेतु डेनमार्क की राजधानी कोपेन हेगन में जो विचार–विमर्श हुआ, उसका चित्रण करने की कोशिश इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

ग्लोबल वार्मिंग सम्मेलन 2009

यह सम्मेलन डेनमार्क की राजधानी कोपेन हेगन में 8 दिसंबर से 18 दिसंबर 2009 को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में 193 देशों के मुखिया अधिकारी, पर्यावरणविद् और पत्रकार जिनकी संख्या लगभग 1500 थी, इस समस्या पर चर्चा हेतु एकत्रित हुए। धरती को बचाने का यह अचूक मौका था। भूमि को रेगिस्तान से बचाने एवं समुद्र के बढ़ते जल स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ की चेतावनी पर यह सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में बराक ओबामा (अमेरिकी राष्ट्रपति), डॉ. मनमोहन सिंह (भारतीय प्रधानमंत्री) एवं चीनी नेता बान जियाबाओं उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त इस सम्मेलन में निम्नलिखित राष्ट्राध्यक्षों एवं प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ईवोडिबुओं – संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यकारी सचिव हैं, उनकी प्रमुख मंसा कोपेन हेगेन बाध्यकारी संधि पर सहमति था।

एडमिलीलैण्ड–तत्कालीन ब्रिटिश जलवायु परिवर्तन मंत्री जो इस सम्मेलन की सफलता हेतु भरसक प्रयास किया। वे चाहते थे कि इस कार्यक्रम हेतु गरीब देशों को दी जाने वाली मदद पक्की हो। केविनकोण्डसन मॉलद्वीप एवं अन्य 42 गैर द्वीपीय राज्यों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने बॉली जलवायु सम्मेलन में अमेरिका को चुनौती दी थी कि 'तुम किसी कारण दुनियाँ का नेतृत्व नहीं कर सकते, तो हमारे रास्ते से हट जाओ'। जयराम रमेश भारत के वन एवं पर्यावरण मंत्री

का कहना था कि – कटौती का विरोध करेंगे, क्योंकि जलवायु संकट को उन्होंने विकसित राष्ट्रों की देन माना। जोनाथन कोपेन हेगेन में अमेरिका के मुख्य वार्ताकार थे, उनके अनुसार जलवायु संकट को देखते हुए अमेरिका ने लचीला रुख अपनाने की मंसा जाहिर की हैं। उपरोक्त किरदारों के अलावा ब्रिटेन के मुख्य वार्ताकार जेनथाम्पसन, चीन के राष्ट्रपति हुजिन्ताओं, भारतीय दूत श्यामशरण, आस्ट्रेलियाई मंत्री पेनीवांग, डेनमार्क के जलवायु मंत्री कोनीहेदमोर की प्रमुख भूमिका रही।

कोपेन हेगेन सम्मेलन के दूसरे दिन मसौदे को लेकर विकसित एवं विकासशील देशों के बीच मतभेद का संकट दिखाई दिया। इस सम्मेलन में विगत दो वर्षों से चर्चा चल रही थी। उन सभी बातों को मसौदे में नहीं रखा गया था, अतः सभी विकासशील देश एकजुट होकर रखे गये मसौदे का विरोध करने लगे। मसौदे में विकासशील देशों से कहा गया कि, वे 2050 तक प्रति व्यक्ति 1.44 टन कार्बन से अधिक उत्सर्जन नहीं करेंगे जबकि विकसित राष्ट्रों के लिये 2.67 टन रहेगी। इस संबंध में रूस ने कहा कि क्योटो प्रोटोकाल के स्थान पर ऐसी किसी भी संधि से संतुष्ट नहीं है। श्रीशमा नोवा ने कहा कि विकासशील देशों ने गैस उत्सर्जन घटाने वाली किसी बाध्यकारी जिम्मेदारी को पूरी तरह खारिज कर दिया। वे विकसित राष्ट्रों से यह माँग कर रहे हैं, कि वर्ष 2012 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन कम करने के लिये अतिरिक्त जिम्मेदारी लें। चीन ने 2020 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी करने के लिये अमेरिका, यूरोपीय संघ एवं जापान के लक्ष्यों की आलोचना की । चीन ग्लोबल वार्मिंग का असर कम करने के लिये 25 से 40 प्रतिशत कमी लाने पर बल दिया। जापान ने 28 प्रतिशत कटौती को असंभव शर्त बताया।

जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के चौथे दिन अफ्रीकी देशों ने क्योटो प्रोटोकाल से कहीं ज्यादा सख्त कदम उठाने की माँग की। इसके लिये कानून बनाना आवश्यक बताया, किन्तु भारत एवं चीन जैसे बड़े विकासशील राष्ट्रों ने इसका विरोध किया। क्योंकि उन्हें डर था कि इसका असर उनके विकास पर पड़ेगा। इस समस्या के समाधान हेतु यूरोपीय संघ विकास कोष में 76.5 करोड़ योगदान की योजना बनाई गई। अति कमजोर राष्ट्रों द्वारा टुकालु के नेतृत्व में सम्मेलन में बहिर्गमन करके अवरुद्ध करने का प्रयास किया। जिसके कारण कुछ घंटों तक कार्यवाही रोकनी पड़ी। द्वीपीय देश का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ने से सबसे अधिक खतरे में वे लोग हैं। अतः इससे (कोपेन हेगन) के बाहर भी अतिमहत्वपूर्ण समझौता चाहते हैं। भारत एवं अन्य उभरती अर्थव्यवस्था ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका एवं चीन द्वारा जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव से दुनियाँ को बचाने के लिये तैयार किये गये मसौदे इस सम्मेलन में चर्चा का मुख्य मुद्दा बन गया था।

जी–77 देशों और चीन ने अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा से कहा कि वह नोबेल शांति पुरस्कार विजेता के तौर पर जलवायु परिवर्तन के मुद्दे से जुड़ें। मानव को इस संकट से बचाने के लिये धन मुहैया कराने के अलावा इस मुहिम में अपने देश का नेतृत्व करें। जी–77 देशों के अध्यक्ष एल.एस. दपांग के अनुसार, "संयुक्त राष्ट्र संघ के बिना धरती को बचाने के लिये उचित और बराबरी का समझौता नहीं हो सकता। अमेरिका मानवता के लिये इस खतरे से निपटने में भागीदारी नहीं करेगा तो वैश्विक शांति एवं सुरक्षा पर खतरा है।"

रूस ने 2020 तक 25 प्रतिशत तक उत्सर्जन में कटौती करने तथा अगले 3 वर्षों में 4.4 अरब डॉलर का वैश्विक कोष बनाने की बात कही। ब्रिटेन सबसे अधिक 88.3 करोड़ डॉलर

राशि मुहैया करायेगा, किन्तु जर्मनी सर्वाधिक धनराशि उपलब्ध कराने की बात कही। धन के मामले और कटौती की बात पर विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों के मध्य खाई बढ़ती नजर आ रही थी। जी–77 के प्रवक्ता एवं सूडान के लुमुंबा स्टेनिसलाडी एपींग ने धनी देशों पर आरोप लगाया कि, वे इस समस्या को कम आंक रहे हैं। धनी देश धन उपलब्ध कराने में रुचि नहीं रख रहे हैं।

कोपेन हेगेन के सम्मेलन में चीन एवं अमेरिका के बीच तकरार और तेज हो गई। चीन ने आक्रामक रुख अपनाते हुए कहा कि चीन के शीर्ष दूत अमेरिकी हरितकोष चीन को नहीं देने की बयान देकर गैर–जिम्मेदारी का परिचय दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि विकसित देश चाहते हैं कि उत्सर्जन कटौती के दीर्घकालिक लक्ष्यों पर गरीब देश दस्तखत करेंगे। तब उन्हें अधिक अंशकालीन वित्तीय सहायता मिलेगी। बराक ओबामा के विशेष दूत टाडर्स्नन ने कहा कि सार्वजनिक निधि को चीन में जाते नहीं देख सकते। तब चीन ने कहा कि, यह बयानबाजी उस वैश्विक सहमति के साथ विश्वासघात है, जिसमें गरीब देशों को अमीर देशों की ओर से सहायता का जिक्र किया है। हम कोई चंदा नहीं माँग रहे हैं। अतः अमेरिका का बयान गैरजिम्मदाराना है।

आर्कटिक क्षेत्र के रहने वाले इनुइट समुदाय के लोगों ने जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन के लिये आर्थिक मदद की माँग की। इस क्षेत्र में जलवायु का असर दिन प्रतिदिन दिखाई दे रहा है। बढ़ते तापक्रम के कारण शिकार के अनुकूल मौसम बहुत कम दिनों का हो रहा है। ग्रीनलैण्ड, कनाडा, अलास्का और रूस में फैले इस समुदाय के लोगों का जीवन मुख्यतः शिकार पर निर्भर है। अतः बाँस को सुरक्षित रखने के वैकल्पिक रास्ते तलाशने होंगे। इसी प्रकार अलास्का में अपरदन से गांव समुद्र में विलीन हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के दौरान ग्लोबल वार्मिंग रैली का आयोजन भी किया गया था। किन्तु रैली के अचानक हिंसक हो जाने के कारण 1000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। कड़कड़ाती सर्दी में भी पर्यावरण हितैषी सड़कों पर उतर आये थे। इन प्रदर्शनकारियों में भारतीय अभिनेता राहुल बोस, डेनिश मॉडल हेलेना क्रिसटेसेन भी मौजूद थी। भारत ने भी इस बात को स्पष्ट कर दिया, कि उसने क्यों प्रोटोकाल में किसी प्रकार के संशोधन का विरोध किया और अगले दो दशकों में कार्बन डाईऑक्साइड को कम करेगा। आस्ट्रेलिया ने भी अपनी बात रखते हुए कहा कि इस अभियान में सभी देशों को सम्मिलित होना चाहिये। संयुक्त राष्ट्र संघ के मसौदे के अनुसार 2050 तक 50 प्रतिशत तक कटौती करेंगे।

सम्मेलन के सातवें दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार आगामी 2090 तक तापमान में बढ़ोतरी और ग्लेशियर के पिघलने का क्रम जारी रहा तो एसिड की मात्रा 50 गुना बढ़ जायेगी और कई देशों के समुद्र में समा जाने का खतरा बढ़ जायेगा। सम्मेलन में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार 1979 से वर्तमान तक आर्कटिक क्षेत्र की बर्फ में कमी पायी गई।

इस दिन जी–77 देशों ने बैठक का बहिष्कार किया। इनका कहना है कि अमीर देशों के अड़ियल रवैये के चलते बैठक में बाधा आयी है, क्योंकि विकसित राष्ट्र कार्बन उत्सर्जन में और अधिक कटौती करने तैयार नहीं हैं। भारत के तत्कालीन पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने साफ कहा कि भारत अपने मुख्य सिद्धांतों पर समझौता नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि वार्ता का नतीजा संयुक्त राष्ट्र संघ के जलवायु परिवर्तन संबंधी प्रारूप के भीतर क्योटो प्रोटोकॉल के मुताबिक और बाली एक्शन प्लान के अनुपालन में होना चाहिये। श्री जयराम रमेश ने जिन सिद्धांतों पर समझौता नहीं करने की बात कही है, वह निम्नांकित हैं:

1. उत्सर्जन में कमी के लिये कानूनी बाध्यता नहीं होगी।
2. शीर्षवर्ष (पीकिंग इअर) स्वीकार नहीं।
3. उत्सर्जन घटाने के लिये घरेलू वित्तीय प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय समीक्षा के दायरे में नहीं लाना।

सम्मेलन के आठवें दिन यूरोपीय संघ गैसों के उत्सर्जन में 30 प्रतिशत तक कटौती पर सहमत हो गये, किन्तु इस सम्मेलन में समझौते की दिशा में कोई खास परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। धनी देश भारत और चीन को दोषी ठहरा रहे थे, जबकि एक अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि धनी देशों में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने की इच्छा का अभाव विनाशकारी है। यूरोपीय देशों की 30 प्रतिशत कटौती करने पर कार्सटेंशन ने कहा कि धनी देश गरीब देशों को जलवायु प्रभावों को रोकने के लिये 10 अरब डॉलर देगा, जबकि विश्व बैंक द्वारा 75 अरब डॉलर सालाना है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के एक अध्ययन के अनुसार 245 आपदाओं में 224 आपदायें खराब मौसम के कारण थीं । इस अध्ययन में इन आपदाओं से निपटने के लिए एक मजबूत समझौते को रेखांकित किया गया है। इस दौरान इन आपदाओं से 5.80 करोड़ लोगों में से 5.50 करोड़ लोग मौसम संबंधी आपदाओं से प्रभावित थे। कार्यक्रम के WMO एवं CRED द्वारा संयुक्त अध्ययन के अनुसार उपरोक्त आपदाओं के लिये एशिया को जिम्मेदार ठहराया। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार ग्रीन हाउस गैसों की तरह कालिख और धूल हिमालय का तापमान बढ़ा रहा है। नासा के ग्रोडर्डस्पेस लाइट सेंटर में वायुमंडलीय विज्ञान के प्रमुख विलियम लेउ के अनुसार कालिख की वजह से पूरे दक्षिण एशिया में लकड़ी एवं गोबर से जलने वाले चूल्हों की वजह से दक्षिण से चलने वाली हवा तिब्बत के पठार में कालिख और धूल जमा होकर तापमान में वृद्धि कर रहे हैं। तापमान के कारण ग्लेशियर पिघल रहा है जिससे 1.3 अरब लोग प्रभावित हो रहे हैं। इस बहस पर फ्रांस एवं अमेरिका ने तापमान में कमी करने हेतु अपील की तथा अमीर देशों द्वारा गरीब देशों की मदद करने की बात कही। इस प्रकार सम्मेलन में प्रतिदिन आरोप–प्रत्यारोप का दौर चलता रहा ।

सम्मेलन के अंतिम दूसरे दिन उस समय गतिरोध पैदा हो गया जब मेजबान देश द्वारा गरीब देशों के अनुरोध को अनदेखी करते हुए अपने राजनीतिक घोषणा पत्र पर जोर दिया। डेनमार्क के प्रधानमंत्री लार्सलोक्के रासमुस्सेन ने विकासशील देशों के किसी भी पर्यावरण मंत्री को राजनीतिक घोषणा पत्र का मसौदा दिखाने से इंकार कर दिया। घोषणा पत्र में राष्ट्राध्यक्षों के समक्ष प्रस्तुत किये जाने पर बल दिया। भारतीय पर्यावरण मंत्री ने उचित नहीं माना। जापान जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिये सहमत हुआ और 15 अरब डॉलर देने की घोषणा की। अमेरिका विदेश मंत्री हेनरी क्लिंटन ने कहा कि उनका देश 2020 तक कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने हेतु गरीब देशों को 100 अरब डॉलर की मदद करेगा। चीन ने विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन की घोषणा का स्वागत किया, कि उनका देश अमेरिका की चीनी कार्बन उत्सर्जन निगरानी की माँग पर समझौता कर सकता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव बॉन की मून ने कहा कि कोपेन हेगेन में जलवायु परिवर्तन हेतु समझौते को अमली जामा पहनाने के लिये विश्व नेताओं से अपील की। यहाँ उपस्थित विश्व के राष्ट्राध्यक्ष समझौता नहीं करेंगे तो कौन करेगा। अब आपसी समझ, सहमति और साहस की जरूरत है हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम भविष्य के लिये कदम उठायें।

कोपेन हेगेन मसौदे की मुख्य बातें निम्न हैंः–

1. **दीर्घकालीन लक्ष्यः**–विज्ञान के मुताबिक वैश्विक उत्सर्जन में बड़े पैमाने पर कटौती आवश्यक है और यह कटौती वैश्विक तापमान में दो डिग्री सेल्सियस से कम की बढोतरी को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिये।
2. **कानूनी तौर पर बाध्य समझौताः**–कानूनी रूप से अगले वर्ष तक के लिये बाध्यकारी जलवायु परिवर्तन से जुड़े समझौते के संबंध में इसमें पहले तैयार किये गये मसौदे का जिक्र समझौते के अंतिम प्रारूप से गायब था। जिसकी वजह से यूरोपीय संघ के अलावा प्रशांत महासागर में स्थित देश तुवालु चिंतित थे।
3. **गरीब देश को वित्तीय मददः**–मसौदे के अनुसार इस समझौते को लागू करने के लिये विकसित देश विकासशील देशों को पर्याप्त वित्तीय और तकनीक मदद मुहैया कराते रहेंगे। इसमें कम विकसित देश, छोटे महाद्वीप वाले विकासशील देशों और अफ्रीकी देशों को खास तौर पर मदद करने का जिक्र किया गया है। मदद राशि 100 अरब डॉलर की राशि सार्वजनिक एवं निजी, बहुपक्षीय सहित कई स्त्रोतों से एकत्रित की जायेगी।
4. **उत्सर्जन में कटौतीः**–मसौदे में कार्बन उत्सर्जन संबंधी दो संलग्नक हैं। एक में विकसित देशों के लिये कटौती का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जबकि दूसरे में बड़े विकासशील देशों के लिए स्वैच्छिक प्रतिबद्धता का जिक्र है। ये कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है।
5. **निगरानी अथवा जांचः**–चीन ने कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण को मानने से इंकार कर दिया है। इसलिये विकासशील देशों पर निगरानी या कटौती से जुड़ा भाग मसौदे में सबसे बड़ा है।
6. **वन संरक्षणः**–मसौदे में घने जंगलों से होने वाले ग्रीन हाउस उत्सर्जन में कटौती के लिये इनकी कटाई करने की जरूरत पर भी बल प्रयोग एवं विकसित राष्ट्रों द्वारा धन उपलब्ध कराया जायेगा।
7. **कार्बन बाजारः**–मसौदे में कार्बन बाजार का जिक्र किया गया है। मसौदे के अनुसार कार्बन के स्टोर में कटौती को बढ़ावा देने के लिये, उसकी कीमतों में कटौती बढ़ाने के लिये, बाजार का इस्तेमाल करने का फैसला लिया गया। इसके अलावा कई तरह के दृष्टिकोणों का फैसला करना कठोर सौदेबाजी और मंत्रणायें की गईं। तत्पश्चात् अंततः कोपेन हेगेन समझौता पारित हो गया । इस निर्णय से संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्कालीन महासचिव बॉन की मून ने कहा कि अब भारत और अन्य देशों द्वारा तैयार समझौता लागू होगा। महासचिव के अनुसार चार प्रमुख तत्व वैश्विक तापमान वृद्धि के उत्सर्जन में कटौती की सभी देशों की प्रतिबद्धता, वनों की कटाई को रोकने एवं इस संकट से निपटने के लिये गरीब देशों की मदद के लिये कोष जुटाना है।

इस प्रकार विभिन्न रुकावटें एवं वाद–विवाद के बीच कोपेन हेगेन सम्मेलन न्यूनतम समझौते के साथ समाप्त हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बॉन की मून ने कहा कि अंततः सभी देशों ने एक समझौते को अपनी मंजूरी दी। कोपेन हेगेन सम्मेलन संभवतः सभी देशों की आशा के अनुरूप नहीं है, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग समस्या के समाधान हेतु एक महत्वपूर्ण प्रयास की शुरूआत है।

संदर्भ सूची

दैनिक समाचार पत्र, (2009), *नवभारत,* दिनांक 8 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक, दुर्ग (छ.ग.)।

दैनिक समाचार पत्र, (2009), *नई दुनिया,* दिनांक 8 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक, दुर्ग (छ.ग.)।

दैनिक समाचार पत्र, (2009), *दैनिक भास्कर,* दिनांक 8 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक, दुर्ग (छ.ग.)।

फड़िया, बी.एल., (2011), *अंतराष्ट्रीय राजनीतिक सिद्धांत एवं समकालीन मुद्दे,* साहित्य प्रकाशन, आगरा।

शर्मा, जी.एल., (2015), *सामाजिक मुद्दे,* रावत पब्लिकेशन, जयपुर।